एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

## हमेशा अपनी सादगी और कर्मठता के लिए याद किये जाएंगे

# मनोहर परिकर

परिकर ऐसे जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति थे जो हमेशा सादगी से रहना पसंद करते थे। हमेशा आधे बाजू की शर्ट और स्लीपर में नजर आने वाले मनोहर परिकर के चेहरे पर हमेशा मुस्कराहट भरी भाव भंगिमा रहती थी। वह अपने काम के प्रति समर्पित और लोगों के प्रति जवावदेह व्यक्ति थे, उनकी यही खासियत उन्हें बाकी राजनेताओं से अलग बनाती थी। वह भारत के किसी राज्य के मुख्यमंत्री बनने वाले ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने आईआईटी से स्नातक किया। मनोहर परिकर ने 1978 में आईआईटी बॉम्बे से मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया था। गोवा में भाजपा को सत्ता तक पहुंचाने का श्रेय सिर्फऔर सिर्फमनोहर परिकर को जाता है। उनकी सादगी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की वजह से ही वो गोवा के चार बार मुख्यमंत्री रहे और उन्होंने अंतिम सांस भी गोवा के मुख्यमंत्री रहते हुए ली। मनोहर परिकर ऐसे नेता थे जिन्होंने गोवा में भाजपा की जड़ें जमाई। गोवा में मनोहर परिकर का नेतृत्व सर्वस्वीकार्य था। 2017 में गोवा में भाजपा को कांग्रेस से कम सीटें मिली फिर भी भाजपा ने मनोहर परिकर के करिश्माई नेतृत्व की वजह से गोवा में पुन: सरकार बनाई और मनोहर परिकर गोवा के चौथी बार मुख्यमंत्री बने, परिकर ने गोवा में छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों के समर्थन से सरकार बनाई। 2017 विधानसभा चुनाव के बाद गोवा में छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों ने इस शर्त पर भाजपा को समर्थन दिया था कि मनोहर परिकर को गोवा का मुख्यमंत्री बनाया जाए। इसके बाद उन्हें देश के रक्षामंत्री पद से इस्तीफा दिलाकर गोवा में भेजा गया। कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, पारदर्शी, और स्पष्टवादी सोच मनोहर परिकर को सबसे अलग बनाती थी, उनकी कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, पारदर्शी, और स्पष्टवादी सोच कि बदौलत ही 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें देश का रक्षा मंत्री बनाया। उन्होंने तीन साल तक देश के रक्षामंत्री के तौर पर अविस्मरणीय काम किया। उरी आतंकी हमले के बाद उन्होंने सेना द्वारा पकिस्तान में की गयी सर्जिकल स्ट्राइक में भी अपनी एक अहम् भूमिका निभाई। कहा जाए तो रक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने सशस्त्र बलों को आधुनिक बनाने का काम किया। मनोहर परिकर हमेशा विचारधारा पर अडिग रहने वाले और अपनी सादगी के लिए जाने जाते थे। पिछले एक साल से वह अग्नाशय के कैंसर से पीड़ित थे, कैंसर जैसी बीमारी की पीड़ा झेलते हुए भी लगातार एक साल से गोवा के लोगों की सेवा में समर्पित थे। कुछ समय पहले गोवा का बजट पेश करने से पहले मनोहर परिकर ने कहा था, श्परिस्थितियां ऐसी हैं कि विस्तृत बजट पेश नहीं कर सकता लेकिन मैं बहुत ज्यादा जोश और पूरी तरह होश में हूंश् इससे उनकी काम के प्रति भूख और परिश्रम का अंदाजा लगाया जा सकता है। मनोहर परिकर ने अपने अंतिम समय तक पूरे जोश के साथ गोवा के लोगों और देशवासिओं की सेवा की। अपने अंतिम समय तक गोवा के लोगों की सेवा करने वाले, 2016 में उरी आतंकी हमले के बाद पकिस्तान में भारतीय सेना द्वारा की गयी सर्जिकल स्ट्राइक में देश के रक्षामंत्री के तौर पर अहम् भूमिका निभाने वाले, ईमानदारी, सादगी और समर्पण की मिसाल गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिकर का 63 साल की उम्र में आज (17 मार्च 2019) को दुखद निधन हो गया, उनका जाना भाजपा ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राजनीतिक जगत के लिए क्षति है। मनोहर परिकर वास्तव में सच्चे राष्ट्रभक्त थे। गोवा के विकास पुरुष के रूप में वे सदैव स्मरणीय रहेंगे। व्यवहार में सौम्य और मृदुभाषी मनोहर परिकर को देश हमेशा अपनी यादों में जीवित रखेगा। ईश्वर उनकी पवित्र आत्मा को शांति प्रदान करे।

2017 विधानसभा चुनाव के बाद गोवा में छोटे दलों और निर्दलीय विधायकों ने इस शर्त पर भाजपा को समर्थन दिया था कि मनोहर परिकर को गोवा का मुख्यमंत्री बनाया जाए। इसके बाद उन्हें देश के रक्षामंत्री पद से इस्तीफा दिलाकर गोवा में भेजा गया।

मनोहर परिकर ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने गोवा में भारतीय जनता पार्टी को ऊंचाइयों पर पहुँचाया इसके साथ ही गोवा में भाजपा को एक अहम् पहचान दिलाई। मनोहर

# मोहब्बत करने वाले कम न होंगे, तेरी महफिल में लेकिन हम न होंगे!

अपनी दमदार आवाज और अनूठी अदा से अपने विरोधियों एवं प्रतिद्वंद्वियों को अक्सर ''खामोश'' कराते रहे शत्रुघ्न सिन्हा पिछले करीब पांच साल से भाजपा में अपनी अनदेखी के खिलाफपार्टी के भीतर और बाहर अपने बागी तेवर और तीखे तंजों से आक्रामक रहे हैं। पार्टी के खिलाफ उनकी इस मुखरता से 2019 लोकसभा चुनाव में ''बिहारी बाबू'' को टिकट नहीं मिलना लगभग तय है और पार्टी से उनके अलविदा कहने की भी प्रबल संभावना प्रतीत हो रही है। स्वयं सिन्हा ने भाजपा छोड़ने का हाल में संकेत देते हुए ट्वीट किया, '' जनता से किए गए वादे अभी पूरे होने बाकी हैं...मोहब्बत करने वाले कम न होंगे, तेरी महफ्लि में लेकिन हम न होंगे।'' ट्वीट में उनका संकेत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरफहै। पटना साहिब से भाजपा सांसद सिन्हा ने साल 1969 में फिल्म 'साजन' से अपने बॉलीवुड करियर की शुरुआत की थी। सिन्हा ऐसे मंझे हुए अभिनेता हैं कि उन्होंने खलनायक और नायक, दोनों के किरदारों में कई ब्लॉकबास्टर फिल्में दीं और उनके 'अबे खामोश....' जैसे अनेक संवादों ने बॉलीवुड में धूम मचाई। सिन्हा की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार वह 1974 में पहली बार लोकनायक जयप्रकाश नारायण के सम्पर्क में आये। जयप्रकाश के व्यक्तित्व ने उन्हें राजनीति के माध्यम से सार्वजनिक जीवन उतरकर जन कल्याण के कार्यों में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया।

फिल्मी जीवन की तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वह 1980 दशक के मध्य से ही स्टार प्रचारक के रूप में भाजपा की चुनावी रैलियों में उतरने लगे थे। उन्होंने 1992 में नयी दिल्ली लोकसभा की प्रतिष्ठित सीट से पहली बार अपनी चुनावी किस्मत आजमायी थी। यह चुनाव कई मामलों में ऐतिहासिक और पूरे देश की रुचि का केन्द्र बन गया था। इससे पहले भाजपा के कद्दावर नेता लालकृष्ण आडवाणी ने इसी सीट पर अपने समय के सुपरस्टार एवं कांग्रेस प्रत्याशी राजेश खन्ना को परास्त किया था। किंतु चुनाव जीतने के बाद आडवाणी ने नयी दिल्ली सीट छोड़ दी थी क्योंकि वह गांधीनगर लोकसभा सीट से भी निर्वाचित हुए थे। इसके बाद नयी दिल्ली लोकसभा के लिए हुए उप चुनाव में राजेश खन्ना कांग्रेस के प्रत्याशी और शत्रुघ्न सिन्हा को भाजपा का प्रत्याशी बनाया गया। किंतु सिन्हा की किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया और वह खन्ना के हाथों हार गये। बाद में वह 1996 एवं 2002 में राज्यसभा के लिए निर्वाचित हुए। इसके बाद वह 2009 और 2014 का लोकसभा चुनाव पटना साहिब संसदीय क्षेत्र से जीते। सिन्हा अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार में स्वास्थ्य एवं जहाजरानी मंत्री रहे और वह मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में भी मंत्री बनने की उम्मीद लगाए बैठे थे। लालकृष्ण आडवाणी के करीबी माने जाने वाले सिन्हा ने प्रधानमंत्री मोदी की आलोचना प्रत्यक्ष और परोक्ष ढंग से करने में कोई परहेज नहीं किया। 'बिहारी बाबू' कहे जाने वाले सिन्हा कभी बिहार के मुख्यमंत्री बनने का सपना भी देखते थे लेकिन बिहार में उनकी जगह सुशील कुमार मोदी जैसे नेताओं को ज्यादा महत्व दिया गया। भाजपा नेतृत्व ने 2015 में बिहार में चुनाव के दौरान शत्रुघ्न सिन्हा को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। यहां तक कि उन्हें भाजपा की ओर से स्टार प्रचारक तक नहीं बनाया गया।

**फिल्मी जीवन की तमाम व्यस्तताओं के बावजूद वह 1980 दशक के मध्य से ही स्टार प्रचारक के रूप में भाजपा की चुनावी रैलियों में उतरने लगे थे। उन्होंने 1992 में नयी दिल्ली लोकसभा की प्रतिष्ठित सीट से पहली बार अपनी चुनावी किस्मत आजमायी थी।**

सिन्हा, पूर्व केन्द्रीय मंत्रियों यशवंत सिन्हा और अरूण शौरी के साथ मोदी सरकार के मुखर विरोधी रहे। किंतु भाजपा उनके खिलाफकोई कार्रवाई करने में ''खामोश'' ही रही है। जाहिर है कि पार्टी उन्हें निष्कासित करने जैसा कोई कदम उठाकर उन्हें ''राजनीतिक शहीद'' नहीं बनाना चाहती। ऐसी अटकलें हैं कि राजद और कांग्रेस नीत विपक्षी महागठबंधन सिन्हा को पटना साहिब लोकसभा सीट से मैदान में उतार सकता है। वर्ष 1993 के मुंबई बम धमाकों के दोषी याकूब मेमन की फांसी की सजा के मुद्दे पर भी शॉटगन ने पार्टी लाइन से इतर जाकर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भेजी गई एक दया याचिका पर हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने बालाकोट आतंकी शिविर पर भारत के हवाई हमले को लेकर सरकार से ब्योरा जारी करने की मांग की थी और बड़ी संख्या में आतंकियों के मारे जाने के दावे को ''तमाशा'' करार दिया था। शॉटगन हाल ही में तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष ममता बनर्जी की विपक्षी दलों की महा-रैली में शामिल हुए थे। वहां उन्होंने राम मंदिर के मुद्दे पर पत्रकारों के सवाल के जवाब में कहा था ,''खामोश।'' सिन्हा ने 2016 में अपनी आत्मकथा 'एनीथिंग बट खामोश' में अपनी निजी, फिल्मी और राजनीतिक जिन्दगी से जुड़े कई राज खोले थे। उन्होंने इस किताब में कहा कि अमिताभ बच्चन उनकी शोहरत से परेशान थे। उनकी वजह से उन्हें कई फिल्में छोड़नी पड़ीं। सिन्हा ने कहा कि अभिनेत्री जीनत अमान और रेखा की वजह से उनके तथा बच्चन के बीच दरार बढ़ी। किताब में उन्होंने 1992 में नयी दिल्ली लोकसभा सीट पर राजेश खन्ना से उपचुनाव हार जाने को बेहद निराशाजनक क्षणों में से एक बताया था।